[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 2229 **H**

Unique Paper Code : 62057638

Name of the Paper : विशेष अध्ययन: एक प्रमुख साहित्यकार प्रेमचंद

Name of the Course : **B.A. (Prog.)**

Semester : VI

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।**

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10+10=20)

(क) इस निर्णय की कहीं अपील न थी। मजूर की जमानत कौन करता? कहीं शरण न थी, भागकर कहाँ जाता? दूसरे दिन से विप्रजी के यहाँ काम करना शुरू कर दिया। सवा सेर गेहूँ की बदौलत उम्र- भर के लिए गुलामी की बेड़ी पैरों में डालनी पड़ी।

उस अभागे को अब अगर किसी विचार से संतोष हुआ, तो वह यह था कि यह मेरे पूर्व जन्म का संस्कार है। स्त्री को वे काम करने पड़ते थे, जो कभी न किए थे, बच्चे दाने को तरसते थे, लेकिन शंकर चुपचाप देखने के सिवा और कुछ न कर सकता था। वह गेहूँ के किसी देवता के शाप की भाँति यावज्जीवन उसके सिर से न उततरे।

अथवा

लालबिहारी सिंह दरवाजे की चौखट पर चुपचाप खड़ा बड़े भाई की बातें सुन रहा था। वह उनका बहुत आदर करता था। उसे कभी इतना साहस न हुआ था कि श्रीकंठ के सामने चारपाई पर बैठ जाय, हुक्का पी ले या पान खा ले। बाप का वह इतना मान न करता था। श्रीकंठ का भी उस पर हार्दिक स्नेह था। अपने होश में उन्होंने कभी उसे घुड़का तक न था। जब वह इलाहाबाद से आते तो उसके लिए कोई न कोई वस्तु अवश्य लाते। मुगदर की जोड़ी उन्होंने ही बनवा दी थी। पिछले साल जब उसने अपने से ड्योढ़े जवान को नागपंचमी के दिन दंगल में पछाड़ दिया, तो उन्होंने पुलकित होकर अखाड़े में ही जाकर उसे गले से लगा लिया था, पाँच रुपये के पैसे लुटाए थे। ऐसे भाई के मुँह से ऐसी हृदय विदारक बात सुनकर लालबिहारी को बड़ी ग्लानि हुई।

(ख) "मैं न्याय नहीं मांगती, दया नहीं मांगती, मैं केवल प्राण-दंड मांगती हूँ। हाँ अपने भाई-बहनों से इतनी विनती करुँगी कि मेरे मरने के बाद मेरी काया का निरादर न करना, उसे छूने से घिन मत करना, भूल जाना कि यह किसी अभागिन पत्नी की लाश है। जीते-जी मुझे जो चीज नहीं मिल सकती, वह मुझे मरने के पीछे दे देना। मैं साफ कहती हूँ कि मुझे अपने किए पर रंज नहीं है, पछतावा नहीं है। ईश्वर न करे कि मेरी किसी बहन की ऐसी गति होय लेकिन हो जाय तो उसके लिए इसके सिवाय कोई राह नहीं है।"

अथवा

इन विचारों से तंग आकर उसने नैराश्य में मुँह छिपाया। अत्याचार हो रहा है। होने दो। मैं क्या करूँ? कर ही क्या सकता हूँ? मैं कौन हूँ? मुझसे मतलब? कमजोरों के भाग्य में जब तक मार खाना लिखा है, मार खाएँगें। मैं ही यहाँ क्या फूलों की सेज पर सोया हुआ हूँ। अगर संसार के सारे प्राणी पशु हो जाएँ तो मैं क्या करुँ? जो कुछ होगा, होगा। यह भी ईश्वर की लीला है! वाह रे तेरी लीला! अगर ऐसी ही लीलाओं में तुम्हें आनंद आता है, तो तुम दयामय क्यों बनते हो? जबरदस्त का ठेंगा सिर पर, क्या यह भी ईश्वरीय नियम है?

2. प्रेमचंद की कहानी-कला का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण कीजिए।

अथवा

'कर्बला' नाटक की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। (15)

3. 'पंच-परमेश्वर' कहानी की तात्त्विक समीक्षा कीजिए।

अथवा

'सद्गति' कहानी के आधार पर तत्त्कालीन सामाजिक विसंगतियों का उद्घाटन कीजिए। (15)

4. 'कर्मभूमि' उपन्यास के आधार पर सुखदा का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

'कलम का सिपाही' की अंतर्वस्तु की विवेचना कीजिए। (15)

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए :

(क) सुभागी का चरित्र-चित्रण।

(ख) 'कर्मभूमि' में गांधी विचारधारा।

(ग) 'कर्बला' नाटक का उद्देश्य।

(घ) 'सवा सेर गेहूँ' कहानी के आधार पर किसानों की विडम्बना।

(5+5=10)